Dr M.K. Jha.
Dept of sociology
V.S.J college, Rajnagar

B.A. Part-III
Paper-VI

Industrial sociology

श्रम संघ की परिभाषा दीजिए संक्षेप में इसके कार्यों का विवेचना कीजिए।

समय के सामाजिक विकास साथ प्रत्येक वर्ग के अन्तर्गत श्रमिक संघों का आविर्भाव और विकास हुआ है। श्रमिक संघों के विकास में विभिन्न विचारधाराओं ने अपना योगदान दिया है। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक आन्दोलनों का प्रभाव भी निर्णायक रहा है। मार्क्स और एंजिल्स ने वर्ग संघर्ष के का जन्म दिया जिसमें सम्पूर्ण मजदूरों को शक्ति एवं चेतना के लिए श्रम संघ का होना परमावश्यक माना है। कम्युनिस्ट घोषणा पत्र में दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ एवं वर्गविहीन समाज की स्थापना की कल्पना किया। वेब्स का मत रहा है कि प्रबन्धकों की तानाशाही समाप्त के लिए श्रम संघ एक लोकतान्त्रिक शक्ति है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति वी॰ वी॰ गिरी के अनुसार श्रमिक वर्ग को शक्ति और सत्ता का आधार एकता पर श्रम-संघों का निर्माण एक सामूहिक क्रिया है। श्रमिक आन्दोलन का आधारभूत लक्ष्य श्रमिकों के हितों की रक्षा और विकास करना है जिसका औपचारिक संगठन श्रम-संघ है जो नियोक्ता या मालिक जो अपने शोषण, लाभ-काम की उचित दशा और जीवन निर्वाह जैसे अपेक्षित माँग के लिए श्रमिक संघों का निर्माण हुआ है।

भारत में आज श्रमिक संघ दो आधार एवं विचारधाराओं पर काम करते हैं पहला, विषयनिष्ठ आधार और दूसरा वस्तु-निष्ठ आधार है।

1. विचारनिष्ठ आधार पर आन्दोलन की विचारधारा पर दृढ़ विश्वास रखा जाता है और सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु एक आस्था का विकास किया जाता है तथा 2. वस्तुनिष्ठ आधार पर मजदूरी प्राप्त करने वाले श्रमिकों का एक संगठन है। श्रम संघ के द्वारा श्रमिक आन्दोलन को संगठनात्मक संरचना प्रदान की जाती है जिसमें आत्मविश्वास एवं एकता का पाठ पढ़ाया जाता है।

श्रमिक संघ अधिनियम (Trade Unions Act 1926) के अनुसार श्रमिक संघ स्थायी या अस्थायी रूप से बनाए हुए एक ऐसा संगठन है जिसकी स्थापना मुख्य रूप से कामगारों और नियोजक के बीच सम्बन्धों को विनियमित या व्यापार के संचालन में प्रतिबन्धित शर्त अथवा अधिरोपित करना है जिसमें दो से अधिक महासंघ सम्मिलित होते रहते हैं।

अतएव श्रम संघ मजदूरों का संगठन है। श्रम संघ का प्रत्यक्ष सम्बन्ध फैक्ट्री प्रणाली से होता है श्रमिक ही एक उत्पादन इकाई है और इसके मालिक पूंजी लगाने वाला व्यक्ति है। अतएव श्रम संघ आन्दोलन यदि सामाजिक समझौता द्वारा अपने रक्षा, व्याज, प्रवेश, कार्यदशा एवं सुरक्षा जैसे मानकों पर श्रम-संघ द्वारा काम-प्रणाली पर मालिक का अनुशंसा प्राप्त करता है जिससे श्रमिकों के जीवन स्तर एवं भविष्य सुरक्षित बन जाते हैं।

Functions of Trade Unions
श्रमिक संघ के निम्नलिखित कार्य मुख्य माने गये हैं-

Scanned with Cam

1. संघनात्मक कार्य - श्रमिक संघ सर्वप्रथम अपनी सदस्यता बनाए रखने की सतत प्रयास करते हैं श्रमिक संघों के सदस्य कामगार व श्रमिक होते हैं जो संघ क्रियाकलाप एवं सहभागिता बनाकर श्रम संघ का आकार देते हैं। श्रम संघ में कार्यकारणी एवं समितियाँ होती हैं जो पैदा मजदूरी एवं कार्यवाही की समीक्षा करती रहती है। अतएव श्रम संघ का संगठन चंदा वसूली, सदस्यता अनुरक्षण, संघ सुरक्षा का काम करते हैं जो समय पर हड़ताल द्वारा प्रभावकारी होता है।

2. सामूहिक सौदेबाजी -
श्रमिक संघ एवं नियोजकों से सामूहिक सौदेबाजी औद्योगिक जगत का महत्वपूर्ण मानक है जिसमें श्रमसंघ, नियोजक के समक्ष मजदूरी, कार्य घंटे, कार्य दशा एवं आवश्यक माँग प्रस्तुत करते हैं और दबाव एवं तर्कपूर्ण ढंग से मजदूरों को सुरक्षा करवाता है।

3. राजनीतिक कार्य - श्रमिक संघ राजनीतिक क्षेत्र में भी क्रियाशील रहते हैं। कुछ देशों में श्रमिक संघों ने अपने राजनीतिक दल भी संगठित किए हैं। ब्रिटेन की लेबर पार्टी Labour party, वहाँ के राष्ट्रीय श्रमिक संघ ट्रेड यूनियन कांग्रेस (Trade Union congress) द्वारा गठित की गई है। श्रमिक संघ चुनाव के माध्यम से अब भारत में राजनीतिक सहभागिता बना रही है और मजदूरों के सुधार योजना, सुरक्षा योजना एवं आर्थिक हित पर निर्णय ली रही है।

4. कल्याणकारी कार्य - श्रमिक संघ अपनी आय के आधार पर सदस्यों को कल्याणकारी सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं।

कार्यों में
श्रमिक संघों के कल्याणकारी, शैक्षणिक सुविधाएँ, आकस्मिक निधि, प्रशिक्षण की व्यवस्थाएं और सहकारी समिति के अलावा सांस्कृतिक कार्यक्रम है।

5. विवादों का संचालन – श्रमिक संघ अधिकांश विवादों को संयुक्त बातों या सामूहिक सौदेबाजी के जरिए सुलझाते है। कुछ देशों में अनुवार्य सुलह तथा अधिनिर्णयन (compulsory conciliation and adjudication) की व्यवस्था है। भारत में जरिए निर्णय न्यायालय के हस्तक्षेप से भी किए जाते है वर्ना अधिकांश विवाद श्रम संघ अपने स्तर से करते है।

6. अन्य कार्य – श्रमिक संघ के अन्य कार्यों में शोध, प्रकाशन, परामर्श, जन-सम्पर्क, सरकारी तंत्रों के साथ सहयोग और त्रिपक्षीय निकायों में भागीदारी आदि प्रमुख है।

अतएव, श्रम संघ श्रमिकों के जीवनदशा, कार्यदशा एवं समायदशा पर उल्लेखनीय कार्य करते रहते है और उत्पादन स्तर को निर्यात योग्य बनाते है।